सफलता का मंत्र - सर्व का सहयोग

✻ ब्रह्माकुमार ललित, शान्तिवन

सफलता प्राप्ति के लिये अनेक आत्माओं के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग की जरूरत रहती है। कार्य की शुरूआत भले अकेले ने की हो परन्तु उसे सर्व के सहयोग से सहजता से सम्पन्न किया जा सकता है। स्वयं सर्वशक्तिवान निराकार परमात्मा पिता शिवबाबा भी साकार ब्रह्मा बाबा एवं ब्रह्माकुमारों-ब्रह्माकुमारियों का सहयोग लेकर यह विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न कर रहे हैं। इसीलिये यादगार चित्रों में भगवान की हज़ारों भुजाएँ दिखाई जाती हैं।

अव्यक्त बापदादा की पधरामणी दादी हृदयमोहिनी जी (गुलज़ार दादी जी) के तन में जब 30 नवम्बर, 2005 के दिन हुई तो उन्होंने युवा प्रभाग के प्रति महावाक्य उच्चारण किये कि जिन युवाओं का राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन हुआ हो उनके अनुभवों की एक पुस्तक बनाई जाए जो सरकार को भी दिखायी जा सके। दूसरे दिन शान्तिवन में युवा प्रभाग की मीटिंग हुई जिसमें निश्चित किया गया कि यह पुस्तक छपवाकर 25 फरवरी, 2006 को प्यारे बापदादा के कमल हस्तों से विमोचन करायेंगे। मैं उस समय युवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजन कार्यालय (अहमदाबाद, महादेव नगर सेवाकेन्द्र) पर अपनी सेवाएं दे रहा था। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका आदरणीया ब्र.कु.चन्द्रिका बहन जी ने शान्तिवन से अहमदाबाद आते ही वहाँ के युवा भाई-बहनों की मीटिंग की और पूछा कि इस सेवा को पूरा करने के लिये कौन जवाबदारी लेने को तैयार है? मैंने सहज रीति से अपना हाथ ऊंचा किया और वह जवाबदारी सर्व सम्मति से मुझे सौंपी गई।

इस पुस्तक के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, शून्य से शुरूआत करनी थी। मुझे सिर्फ इतना विश्वास था कि भगवान ने कहा है माना हुआ ही पड़ा है, बड़ों का आशीर्वाद है तो कार्य समय पर सम्पन्न हो ही जाएगा। जब पुस्तक बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई तब आश्चर्यजनक मदद मिलती गई। भारतभर के सभी सेवास्थानों से लगभग 12000-15000 युवाओं से जीवन परिवर्तन सम्बन्धी फॉर्म्स मंगवाने की प्रक्रिया शुरू की गई। दो भाई, जो अभी कम्प्यूटर की पढ़ाई पढ़ रहे थे, उन्होंने एक सोफ्टवेयर बनाने की ज़िम्मेदारी उठाई जिसमें उन फॉर्म्स का डाटा डाला गया ताकि अलग-अलग रिपोर्ट्स निकाली जा सकें।

सेवाकेन्द्र पर आने वाले भाई-बहनों ने अपने-अपने घरों से कम्प्यूटर लाकर सेवाकेन्द्र पर रख दिये। इस प्रकार 18 कम्प्यूटर्स पर सुबह 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक अविरत गति से यह सेवा चलने लगी। पुस्तक की डिजाइन एवं सामग्री के लिये कुछ विशेषज्ञ अपनी सेवाएं देने को तैयार हो गये। जब पुस्तक (स्वर्णिम प्रभात) प्रिन्ट होकर 25 फरवरी, 2006 को अव्यक्त बापदादा के हस्तकमलों में पहुंची तब हम सभी को अत्यन्त खुशी का अनुभव हुआ। करनकरावनहार बापदादा ने भी उसे सराहा। आज जब वे दिन याद करते हैं तो एक सुहावना सपना ही लगता है क्योंकि इतना बड़ा प्रोजेक्ट इतने कम समय में और बिना विशेष अनुभवी सेवासाथियों के सम्पन्न हो गया।

दूसरों से सहयोग प्राप्त करने का आधार है निरन्तर, नि:स्वार्थ रूप से सभी को सहयोग देते रहना, फिर सहयोग मांगने की ज़रूरत नहीं पड़ती, वह स्वत: दूसरों से मिलता रहता है, वह भी खुशी और प्रेम के साथ। दूसरों के विचारों का सहयोग

(शेष..पृष्ठ 17 पर)

यह असम्भव नहीं है।

भगवान को कहते हैं, बिगड़ी बनाने वाला, न कि बिगाड़ने वाला। भगवान के बच्चे हम भी तो उन जैसे बनें। बिगड़ी को बनाएँ, न कि बनी को बिगाड़ें। जो औरों के काम बनाएगा उसके अपने काम बन जाएँगे, जो औरों के काम बिगाड़ेगा, उसके अपने काम भी बिगड़ जाएँगे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी शाखाओं में बच्चे से लेकर बूढ़े तक को कर्मों को सुखदायी बनाने की शिक्षा दी जाती है। इस नि:शुल्क शिक्षा का लाभ आप भी उठाइये और अपने जान-पहचान वालों को भी दिलवाइये। ऐसी शिक्षा से हर नागरिक कर्मठ, सच्चा और चरित्रवान बनेगा, वह निर्माण करेगा, विनाश नहीं। ❖

सफलता का मंत्र...पृष्ठ 31 का शेष

भी सफलता दिलाता है। हम ऐसे सहयोगी बनें जो दूसरे हमें देखकर योगी बन जाएँ।

सर्व का सहयोग लेना, यह कोई परावलम्बी स्थिति नहीं है बल्कि इससे तो यह सिद्ध होता है कि सभी के दिल में हमारे प्रति स्नेह है। सभी हमारी सफलता चाहते हैं। यह सहयोग हमारी लोकप्रियता का द्योतक है। सहयोग के प्रकार एवं विधियां अलग-अलग हो सकती हैं। यह सहयोग तन-मन-धन-जन-साधन आदि किसी भी रूप में मिल सकता है। सबसे श्रेष्ठ सहयोग है कार्य के प्रति शुभ संकल्प।

ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग का अभ्यास करते-करते परमात्मा पिता भोलेनाथ शिवबाबा ने हमारे जीवन में वे गुण और शक्तियां भर दिए हैं जिनसे स्वत: ही सर्व का सहयोग मिलता है और अन्तत: सफलता प्राप्त होती है। तो आइये, सफलता प्राप्ति के लिये हम सभी दूसरों से सहयोग प्राप्त करने की कला सीखें। ❖

भगवान की पनाह में

ब्रह्माकुमारी आशा, अजमेर

सन् 1998 में एक पर्चा मेरे हाथ में आया। उसे पढ़कर ज्यादा जानने की उत्सुकता जगी तो बस में साथ आने-जाने वाली एक सहशिक्षिका ने ईश्वरीय ज्ञान की कुछ कैसेट्स दीं। उनसे ज्ञान की बातें सुनीं और एक दिन समय निकालकर सेवाकेन्द्र पर गई। वहाँ बाबा के महावाक्य सुनाये जा रहे थे। मुझे पता नहीं था कि यह वही मुरली है जिसे सुनने के लिए गोप, गोपियाँ तड़पते थे। मैं उसे सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठी। ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे ज्ञान सागर मुझ ज्ञान की प्यासी आत्मा की प्यास बुझा रहे हैं। फिर तो सेवाकेन्द्र जाने की लगन लग गई। ब्रह्माबाबा और मम्मा का घर में ही साक्षात्कार हुआ। और भी कई साक्षात्कार हुए। धारणाएँ आसानी से हो गईं, छह महीने में मधुबन आने का सौभाग्य भी मिल गया, भगवान से मिलन मनाया और अपने को शक्तिशाली अनुभव किया।

ज्ञान में चलते-चलते लौकिक परिवार में कई परीक्षाएँ आईं। पति को हृदयाघात हुआ, उन्हें तीन ब्लाकेज बताये गए और आपरेशन की तैयारी हुई। आपरेशन के एक दिन पहले बाबा ने कुछ टचिंग कराई, जिसके आधार पर मैंने आपरेशन करने से मना किया और भरी हुई 50,000 रुपये फीस वापिस ले आई। इसके बाद उन्हें ज्ञान का कोर्स कराया। परिणाम यह निकला कि आज वे स्वस्थ हैं। नियमित क्लास करते हैं। एक बाबा में सम्पूर्ण निश्चय के आधार पर सभी समस्याएँ खत्म होती गईं। अलौकिक जीवन खुशहाल होता गया। परिवार के सभी सदस्य बाबा के कार्य में सहयोगी बन गये हैं। एक दिन गीत बजा 'तेरी पनाहों में पलते हैं, तेरी ही राहों पे चलते हैं।' उसे सुन बाबा के प्यार में खो गई और दिल से निकला धन्यवाद बाबा, जो आपने मुझे अपनी पनाह में ले लिया। ❖